

रॉबर्ट वानॉय, पुराने नियम का इतिहास, व्याख्यान 3

आदिम काल, वंशावली और कालक्रम

पुरातत्व का प्रभाव

पिछली कक्षा के व्याख्यान में मैं रोमन अंक I के बारे में जो कहना चाहता था, मैंने निष्कर्ष निकाला। अब मुझे लगता है कि मुद्दा आम तौर पर पुरातत्व अध्ययन के परिणामों से संबंधित है, जिसने सामान्य रूप से कई चीजें सामने रखी हैं जो ऐतिहासिक रूप से पवित्रशास्त्र में प्रस्तुत की गई तस्वीर को पुष्ट करती हैं। उनमें से अधिकांश खोजें वेलहाउज़ेन के समय के बाद हुईं। दूसरे शब्दों में, 1800 के दशक के अंत में पुरातत्व की शुरुआत ही हुई थी, और बहुत कम काम किया गया था। इसलिए वह ऐसी स्थिति में काम कर रहा था जहां प्राचीन मिस्र की संस्कृतियों आदि के बारे में बहुत कम जानकारी थी। पुरातत्व अनुसंधान के प्रभाव ने निश्चित रूप से पुराने नियम में ऐतिहासिक सामग्रियों की वैधता के प्रति वेलहाउज़ेन के कई संदेहों का प्रतिकार किया है।

लेकिन वहां भी, पुरातत्व बाइबिल विद्वता की दुनिया में आम तौर पर उस तरह की नकारात्मक आलोचना को पूरी तरह से उलटने में सक्षम नहीं है क्योंकि पुरातात्विक खोजों के बावजूद, जो मुझे लगता है कि निश्चित रूप से पुराने नियम की विश्वसनीयता की ओर इशारा करते हैं, आम तौर पर बोलते हुए, आप ऐसा नहीं करते हैं। बहुत सी पुरातात्विक खोजें विशिष्ट पुष्टि प्रदान करती हैं जो धर्मग्रंथों में कही गई बातों के समान हैं। यह अधिक सामान्य पुष्टि है जैसे कि एक कहावत है कि 2700 ईसा पूर्व में मिस्रवासी लिखना जानते थे, जबकि 1800 के दशक में ऐसे लोग हुआ करते थे जिन्होंने दावा किया था कि मूसा के समय में कोई भी लिखना नहीं जानता था। बेशक, यह निराधार दिखाया गया है, मूसा के समय में लोग लिखना जानते थे और उच्च संस्कृतियाँ थीं और वे बहुत परिष्कृत थीं।

पुरातत्व के उपयोग पर सावधानियाँ

इसलिए मुझे लगता है कि पुरातत्व आमतौर पर बाइबिल सामग्री की ऐतिहासिकता का समर्थन करता रहा है। लेकिन हमें इस पर और गौर करने की जरूरत है, क्योंकि कभी-

कभी मुझे लगता है कि लोग पुरातत्व से बहुत अधिक काम करने की उम्मीद करते हैं और हम नहीं चाहते कि धर्मग्रंथ को पुरातत्वविदों के हवाले कर दिया जाए और उन्हें अंतिम निर्णय लेने दिया जाए। क्या हम इस पर विश्वास कर सकते हैं या नहीं ? क्या हमें यह जानने के लिए उनके पास जाना होगा? आपको इस बात से सावधान रहना होगा कि आप पुरातत्व के तर्क का उपयोग कैसे करते हैं। आप इससे बहुत अधिक करने की अपेक्षा कर सकते हैं या आप कह सकते हैं कि इससे बहुत कम करने की अपेक्षा की जा सकती है। एक संतुलन है, आलोचनात्मक विवेक की आवश्यकता है।

मैं पुरातत्व तर्क का उपयोग करूंगा, लेकिन अगर हम दावा करते हैं कि पुरातत्व बाइबल को पुरातत्व से प्रमाणित करता है, तो बाद में आलोचक पुरातत्व से कुछ अन्य सबूतों के साथ आ सकते हैं और कह सकते हैं कि यह बाइबल को अस्वीकार करता है। तब यह एक समस्या हो सकती है. हम उसके कुछ उदाहरण देखेंगे, मैं केवल संक्षेप में बात कर रहा हूँ। इसका मतलब है कि आपको सावधान रहना होगा कि आप "बाइबल को साबित करने" के लिए पुरातत्व का उपयोग कैसे करते हैं। मुझे लगता है कि सामान्य तौर पर हम कह सकते हैं कि पुरातत्व बाइबिल के इतिहास की पुष्टि करता है। मुझे नहीं लगता कि आप अधिकांश मामलों में प्रमाण के बारे में बात कर सकते हैं, हालांकि, ठोस पुष्टि के कुछ अलग-अलग उदाहरण हैं।

आस्था की नींव के रूप में धर्मग्रंथ मुझे लगता है कि मैकेन जो कह रहे हैं वह यह है कि आप धर्मग्रंथ के माध्यम से मसीह को जानते हैं और आप सीखते हैं कि वह कौन है और वह क्यों आए। आप सुसमाचार के बारे में जो कुछ भी जानते हैं वह पवित्रशास्त्र के माध्यम से सीखते हैं। इसलिए धर्मग्रंथ व्यक्ति के धार्मिक अनुभव का आधार बन जाता है। यद्यपि पवित्रशास्त्र अनुभव का आधार है, मुझे लगता है कि वहां एक प्रकार की पारस्परिक क्रिया चलन में आती है। आपका विश्वास निश्चित रूप से आपके अनुभव की पुष्टि करता है। यह पवित्रशास्त्र में आपके विचारों की पुष्टि करता है और मुझे लगता है कि पवित्र आत्मा काम कर रहा है। पवित्र आत्मा पवित्रशास्त्र के माध्यम से कार्य करता है और पवित्रशास्त्र के

माध्यम से हमसे बात करता है। पवित्र आत्मा हमारे दिल और दिमाग में काम करता है ताकि पवित्रशास्त्र में जो कुछ है उसे स्वीकार करने के लिए हमारी समझ को खोल सके ताकि एक पारस्परिक कार्रवाई हो। लेकिन मुझे लगता है कि मैकेन सही हैं, विश्वास की नींव पवित्रशास्त्र है, आत्मा पवित्रशास्त्र के अलावा काम नहीं करती है। यदि आप धर्मग्रंथ की विश्वसनीयता और विश्वसनीयता को कमजोर करते हैं तो लोग धर्मग्रंथ को नहीं सुनेंगे, उन्हें उस पर बौद्धिक आपत्ति होगी, यह उनके लिए इसे बंद कर देता है। पवित्र आत्मा उस पर विजय पा सकता है। मेरा मानना है कि पवित्र आत्मा आम तौर पर तर्कसंगत विचार-विमर्श की सामान्य प्रक्रियाओं के माध्यम से काम करना चुनता है। इस ईसाई विश्वास का आधार क्या है? क्या यह कुछ ऐसा है जो विश्वसनीय है इत्यादि। धर्मग्रंथ विश्वास की नींव है।

बाइबिल रहस्योद्घाटन का एक साधन है जो मसीह की ओर इशारा करता है। यह उस अंत का एक साधन है और हम निश्चित रूप से मसीह की पूजा करते हैं, धर्मग्रंथ की नहीं। कट्टरपंथियों की पकड़ अचूकता पर है और उन पर अक्सर ग्रंथ-मूर्तिपूजा का आरोप लगाया जाता है, और निश्चित रूप से आप इससे बचना चाहते हैं। यीशु ने यहूदी लोगों और अपने समय के शास्त्रियों से कहा, "तुम पवित्रशास्त्र में खोजते हो क्योंकि तुम सोचते हो कि उसमें तुम्हें जीवन मिलेगा, परन्तु तुम मेरे पास नहीं आओगे।" धर्मग्रंथ, एक अर्थ में, क्योंकि वे इसे गलत तरीके से देख रहे थे, जिस तरह से वे इसके बारे में जा रहे थे, वह मसीह के पास आने में उनके लिए बाधा था। मुझे लगता है कि इतिहास ने हमें सिखाया है, जब आप धर्मग्रंथों को कमजोर करते हैं तो यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो लोगों को तब तक दूर कर देगी जब तक कि उनमें बहुत कम विश्वास नहीं रह जाता है। वह प्रक्रिया बार-बार खुद को प्रदर्शित कर रही है।

देखें कि क्या आप इसे इस तरह से रखते हैं कि आप वास्तव में बहुत आसानी से व्यक्तिवाद में पड़ जाते हैं। यदि आप अनुभव करते हैं कि मौलिक और केंद्रीय क्या है और वह व्यक्तिपरक हो जाता है, तो किसी का भी अनुभव मायने रख सकता है। आप अनुभव के महत्व को बाहर नहीं करना चाहते। अनुभव की एक भूमिका होती है लेकिन मुझे नहीं लगता कि इसकी भूमिका मूलभूत है।

द्वितीय. आदिम काल कालक्रम पर सामान्य टिप्पणियाँ आइए रोमन अंक II पर चलते हैं। "आदिम काल।" वहां दो उप-बिंदु हैं, पहले पर आने से पहले मैं कुछ सामान्य टिप्पणियाँ करना चाहूँगा। जब हमने पुराने नियम के इतिहास लेखन के चरित्र पर चर्चा की तो मैंने उल्लेख किया कि उस इतिहास लेखन की प्रकृति के कुछ पहलू हैं जो आधुनिक पश्चिमी इतिहासलेखन के सभी मानकों को पूरा नहीं करते हैं। अब जब आप तुरंत कालक्रम के इस क्षेत्र में आते हैं तो आपका सामना इनमें से एक चीज़ से होता है। आधुनिक पश्चिमी इतिहासलेखन में कालानुक्रमिक संबंध पहली मांगों में से एक हैं, यदि आप इतिहास लेखन करना चाहते हैं तो इसमें सटीकता होनी चाहिए। आपको कालक्रम में सटीकता रखनी होगी। जब आप पुराने नियम को देखते हैं तो आप पाते हैं कि कालानुक्रमिक संबंधों को हमेशा बहुत महत्वपूर्ण नहीं माना जाता है। अब, मैं जो कहता हूँ उसे गलत मत समझना, मैंने कहा कि हमेशा नहीं। पुराने नियम के कुछ भाग ऐसे हैं जहां कालक्रम बहुत महत्वपूर्ण है। किंग्स की पुस्तक में उत्तर और दक्षिण के राजाओं का बहुत सावधानीपूर्वक कालक्रम है, लेकिन जब आप पुराने नियम के कालक्रम के शुरुआती हिस्सों पर वापस आते हैं तो यह कुछ ऐसा नहीं है जिसका स्पष्ट रूप से इलाज किया गया हो। उत्पत्ति 12 में इब्राहीम प्राचीन इतिहास में अपने समय और स्थान के किसी भी उल्लेख के बिना दृश्य में आता है। तो यह हमेशा एक सवाल रहा है कि आप अब्राहम को कैसे डेट करते हैं? आप उसे बाइबिल से परे प्राचीन इतिहास में कहां रखते हैं? वह समय जब इज़राइल मिस्र में था, मैंने एक और प्रश्न का उल्लेख किया है जिसे निश्चित रूप से जानना कठिन है।

इब्राहीम से पहले के समय के लिए भी यही सत्य है। इब्राहीम से पहले वास्तव में आपके पास दो प्रमुख समयावधियाँ हैं। आपके पास आदम से जलप्रलय और नूह तक है, और फिर आपके पास नूह से इब्राहीम तक है। मेरी राय में इनमें से कोई भी अवधि पवित्रशास्त्र में हमारे लिए दिनांकित नहीं है।

ए. वंशावली - जनरल 5 और 11 और कालक्रम अब अक्सर उत्पत्ति 5 में आने वाली

वंशावली का उपयोग करके सृजन से लेकर बाढ़ और बाढ़ से लेकर इब्राहीम तक की अवधि की तारीख तय करने का प्रयास किया गया है, जो एडम की वंशावली का पता लगाता है। नूह और फिर उत्पत्ति 11 में दूसरी वंशावली जो नूह और उसके पुत्रों - शेम, हाम और येपेत - से अब्राहम तक जाती है। आपके पास उत्पत्ति 1 से 12 तक दो वंशावली हैं। अब जैसा कि मैंने उल्लेख किया है कि कुछ लोगों ने आदम, नूह और अब्राहम की तिथियां स्थापित करने के लिए कालानुक्रमिक उद्देश्यों के लिए उन वंशावली का उपयोग करने का प्रयास किया है। मुझे नहीं लगता कि यह वैध है और मुझे नहीं लगता कि यह किया जा सकता है। यदि ऐसा नहीं किया जा सकता है तो उस अवधि की तारीख तय करने का कोई तरीका नहीं है, उन दोनों अवधियों में से कोई भी। अब मैं ए के तहत इस पर चर्चा करते समय आपको कुछ समय पहले इस विषय पर लिखे गए दो लेखों के मूल प्रस्तावों का सारांश देना चाहता हूं। एक विलियम हेनरी ग्रीन द्वारा और दूसरा बीबी वारफील्ड द्वारा। यदि आप रोमन अंक II के अंतर्गत अपनी ग्रंथ सूची शीट को देखते हैं, तो वे दो लेख सूचीबद्ध हैं, विलियम हेनरी ग्रीन, *बिब्लियोथेका सैक्रा* 1890 में "प्राइमवल क्रोनोलॉजी" और डॉ. रॉबर्ट न्यूमैन की पुस्तक में पुनर्मुद्रित परिशिष्ट के रूप में *जेनेसिस वन* और फिर "मानव जाति की पुरातनता और एकता" पर बीबी वारफील्ड का लेख, मूल रूप से 1911 में *प्रिंसटन थियोलॉजिकल रिव्यू में प्रकाशित हुआ* और उनके निबंधों के एक खंड में भी पुनर्मुद्रित हुआ। अब विलियम हेनरी ग्रीन और बीबी वारफील्ड दोनों 1800 के दशक के अंत और 1900 की शुरुआत में प्रिंसटन सेमिनरी में प्रोफेसर थे। उन्होंने इस मुद्दे को संबोधित किया और मुझे लगता है कि वे दो लेख उत्पत्ति 5 और उत्पत्ति 11 की वंशावली के इस विषय पर लिखे गए किसी भी लेख जितने अच्छे हैं। आप उन्हें कभी-कभी देखना और पढ़ना चाहेंगे, लेकिन मैं क्या चाहता हूं उन लेखों में विकसित की गई थीसिस को आपके लिए संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास करें।

बी. ग्रीन और वारफील्ड के 5 प्रस्ताव 1. यह विचार कि मनुष्य हाल की उत्पत्ति का है, इसका पवित्रशास्त्र में कोई आधार नहीं है

मैं आपको पांच थीसिस या प्रस्ताव दूंगा और फिर वॉरफील्ड या ग्रीन के बयानों का समर्थन करूंगा। 1. "यह विचार कि मनुष्य हाल ही में उत्पन्न हुआ है, इसका पवित्रशास्त्र में कोई आधार नहीं है।" वारफ़ील्ड अपने लेख के पृष्ठ 238 पर कहते हैं, "मनुष्य की प्राचीनता के प्रश्न का अपने आप में कोई धार्मिक महत्व नहीं है। यह धर्मशास्त्र और इस तरह के पूर्ण उदासीनता का विषय है कि मनुष्य पृथ्वी पर कितने समय से अस्तित्व में है। यह केवल विरोधाभास के कारण है, जो बाइबिल की कथा में मानव इतिहास के लिए आवंटित छोटी अवधि और एक बहुत लंबी अवधि के बीच खींचा गया है, जिसे वैज्ञानिक अटकलों के कुछ स्कूलों ने पृथ्वी पर मानव जीवन की अवधि के लिए आवंटित किया है। वह धर्मशास्त्र इस विषय में बिल्कुल भी दिलचस्पी लेने लगा है। इस प्रकार बाइबिल के कथनों और वैज्ञानिक जांचकर्ताओं के निष्कर्षों के बीच टकराव की स्थिति पैदा हो गई और इस मामले की जांच करना धर्मशास्त्रियों का कर्तव्य बन गया। हालाँकि दावा किया गया संघर्ष पूरी तरह से तथ्यहीन साबित होता है। बाइबिल मानव इतिहास के लिए कोई संक्षिप्त अवधि नहीं बताती है। यह केवल बाइबिल के डेटा की व्याख्या करने के एक विशेष तरीके से किया जाता है, जो जांच पर पाया जाता है, जिसका कोई ठोस आधार नहीं होता है।" तो अब पहला प्रस्ताव यह है कि "यह विचार कि मनुष्य हाल ही में उत्पन्न हुआ है, इसका पवित्रशास्त्र में कोई आधार नहीं है।" इस प्रकार का प्रश्न धार्मिक महत्व का नहीं है, क्योंकि पवित्रशास्त्र इसका उल्लेख नहीं करता है।

2. उत्पत्ति 5 और 11 की वंशावली में पाए गए बाइबिल डेटा से मनुष्य के निर्माण की तारीख तय करने का प्रयास एक अमान्य प्रक्रिया संख्या 2 है। और 11 एक अमान्य प्रक्रिया है।" वारफ़ील्ड का कहना है, "यह वास्तव में स्वीकार किया जाना चाहिए, कि यह धारणा मानव इतिहास के पाठ्यक्रम के बाइबिल रिकॉर्ड के दोषपूर्ण दृष्टिकोण से आसानी से ली गई है, कि मानव जाति तुलनात्मक रूप से हाल ही में उत्पन्न हुई है। सामान्य बाइबिल पाठकों का यह सामान्य अनुमान रहा है कि बाइबिल के आंकड़े पृथ्वी पर मानव जाति के जीवन की अवधि को केवल 6,000 वर्ष या उसके आसपास ही मानते हैं। यह अनुमान औपचारिक

कालानुक्रमिक योजनाओं में तय हो गया है, जो पारंपरिक हो गए हैं और यहां तक कि धर्मग्रंथ कथा पर कालानुक्रमिक रूपरेखा प्रदान करने के लिए हमारे बाइबिल के हाशिये में भी जगह दी गई है। इन योजनाओं में सबसे प्रभावशाली वह है जिसे 1650 में आर्क बिशप अशर द्वारा तैयार किया गया था। यह वह योजना है, जिसे 1701 से बाइबिल के अधिकृत अंग्रेजी संस्करण के मार्जिन में जगह मिली है। इसके अनुसार इसका निर्माण हुआ दुनिया को वर्ष 4004 सौंपा गया था।" मुझे यकीन है कि आप सभी इससे परिचित हैं। "डेटा की अधिक सावधानीपूर्वक जांच करने पर, जिस पर ये गणनाएं आधारित हैं, हालांकि, वे एक निश्चित कालानुक्रमिक योजना के लिए संविधान के लिए संतोषजनक आधार प्रदान नहीं करते पाए गए हैं। यह डेटा बड़े पैमाने पर और महत्वपूर्ण बिंदुओं पर केवल वंशावली तालिकाओं पर आधारित है और इससे अधिक स्पष्ट कुछ भी नहीं हो सकता है कि वंशावली तालिकाओं से कालानुक्रमिक निष्कर्ष निकालना उच्चतम स्तर तक अनिश्चित है। अब, मुझे लगता है कि वह इसमें सही हैं, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है कि आप उत्पत्ति 5 और उत्पत्ति 11 की वंशावली से ही सृजन की तारीख और बाढ़ की तारीख के बारे में पता लगा सकते हैं। अपने लेख में आगे वह कहते हैं, " इब्राहीम से पहले के पूरे समय के लिए यदि यह पूरी तरह से वंशावली से लिए गए उदाहरणों पर निर्भर है और यदि धर्मग्रंथ वंशावली कालानुक्रमिक अनुमानों के लिए कोई ठोस आधार प्रदान नहीं करती है, तो यह स्पष्ट है कि धर्मग्रंथ संबंधी डेटा के बिना किसी भी अवधि का अनुमान लगाया जा सकता है।

3. उत्पत्ति 5 और 11 की वंशावली का कालक्रम से भिन्न उद्देश्य है

तीसरा बिंदु: "उत्पत्ति 5 और 11 की वंशावली का कालक्रम से भिन्न उद्देश्य है। उनका उद्देश्य वंश की रेखाएँ दिखाना है। वारफ्रील्ड कहते हैं, "सामान्य तथ्य यह कहता है कि पूरे धर्मग्रंथ में वंशावली किसी कालानुक्रमिक उद्देश्य के लिए नहीं बनाई गई थी, और कालानुक्रमिक गणना के आधार पर स्वयं को पूरी तरह से बार-बार दिखाया गया है। लेकिन शायद डॉ. विलियम हेनरी ग्रीन से अधिक किसी और ने नहीं," उस लेख में जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था। "इन वंशावलियों को उन उद्देश्यों के लिए विश्वसनीय माना जाना

चाहिए जिनके लिए उन्हें दर्ज किया गया था। लेकिन उन्हें सुरक्षित रूप से अन्य उद्देश्यों के लिए उपयोग में नहीं लाया जा सकता है जिसके लिए उनका इरादा नहीं था और जिसके लिए उन्हें अनुकूलित नहीं किया गया था।

“ विशेष रूप से यह स्पष्ट है कि जिन वंशावली उद्देश्यों के लिए वंशावली दी गई है, उन्हें उन सभी पीढ़ियों के पूर्ण रिकॉर्ड की आवश्यकता नहीं है जिनके माध्यम से उन व्यक्तियों का वंश चलता है जिन्हें उन्हें सौंपा गया था। लेकिन उस विशेष रेखा के केवल अपर्याप्त संकेत जिससे संबंधित वंशज आता है। तदनुसार, जांच करने पर यह पाया गया कि पवित्रशास्त्र की वंशावली सभी प्रकार के उद्देश्यों के लिए स्वतंत्र रूप से संपीड़ित हैं और इसकी शायद ही कभी विश्वासपूर्वक पुष्टि की जा सकती है, कि उनमें पीढ़ियों की पूरी श्रृंखला का पूरा रिकॉर्ड हो सकता है। जबकि यह अक्सर स्पष्ट होता है कि बहुत बड़ी संख्या छूट जाती है। धर्मग्रंथ वंशावली की प्रकृति में कोई कारण अंतर्निहित नहीं है," और यहां उनके लेख में एक मुख्य कथन है, "शास्त्रीय वंशावली की अंतर्निहित प्रकृति का कोई कारण नहीं है, क्यों दस दर्ज लिंक की वंशावली वास्तव में एक वास्तविक का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती है सौ या एक हजार या दस हजार कड़ियों का वंशज। तालिका द्वारा स्थापित बिंदु यह नहीं है कि ये सभी लिंक हैं, जो आरंभ और समापन नामों के बीच हस्तक्षेप करते हैं। लेकिन यह वंश की वह रेखा है जिसके माध्यम से एक दूसरे के माध्यम से वापस या नीचे जाता है। अब यह उनकी थीसिस का मूल है, जब आपको दस लिंक मिलते हैं तो उन्हें दर्ज वंशावली में नूह के साथ जोड़ दें। इसका मतलब यह नहीं है कि आदम से नूह तक केवल दस पीढ़ियाँ हैं। आपके पास बस इतना है कि यह आदम से नूह तक वंश की रेखा है, आप नहीं जानते कि कितने लिंक हैं या कितने लिंक छोड़ दिए गए होंगे।

एक। "बीगेट" का अर्थ अब हम रुकेंगे और इस पर थोड़ी चर्चा करेंगे क्योंकि मुझे लगता है कि ऐसी कई चीजें हैं जिन्हें और अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता है। पहला यह है, हमें बाइबिल की वंशावली में प्रयुक्त शब्दों "भालू" और "जन्म देना" के अर्थ को समझने की आवश्यकता है। जब यह कहा जाता है, "इतना बोर" का उपयोग महिला के लिए किया

जाता है या "इतना और इतना पैदा हुआ", जिसका उपयोग पुरुष के लिए किया जाता है, तो ये दोनों शब्द चाहे पुरुष के लिए उपयोग किए जाते हैं या महिला के लिए, अक्सर किसी ऐसे व्यक्ति को इंगित करने के लिए उपयोग किया जाता है जो पूर्वज बन गया नामित व्यक्ति का. अक्सर इन दोनों शब्दों का प्रयोग "पूर्वज बनना" के अर्थ में किया जाता है। यदि हम आज अंग्रेजी में कहते हैं, "अमुक ने अमुक को जन्म दिया," तो हम आम तौर पर तत्काल पुत्र के तत्काल वंश के बारे में सोचेंगे। यह आवश्यक नहीं है कि यह वह अर्थ हो जिसमें इसका उपयोग आम तौर पर पवित्रशास्त्र और पुराने नियम में किया जाता है। इसका मतलब तत्काल अवतरण हो भी सकता है और नहीं भी।

बी। "पुत्र" का अर्थ दूसरा शब्द "पुत्र" शब्द है। जब हम तत्काल वंश के बारे में सोचते हैं तो हम "पुत्र" शब्द का उपयोग करते हैं। जब मैं अपने बेटे के बारे में बात करता हूँ तो मैं अपने तीन लड़कों में से एक के बारे में बात कर रहा होता हूँ। पवित्रशास्त्र में इसे अक्सर एक वंशज के रूप में प्रयोग किया जाता है, जरूरी नहीं कि वह तत्काल हो, बल्कि सिर्फ वंशज हो। संभवतः इस शब्द के अर्थ के साथ सबसे आसान और स्पष्ट उदाहरण मैथ्यू 1:1 में है जहां यह कहा गया है, "यीशु मसीह अब्राहम का पुत्र, दाऊद का पुत्र।" वहां आपके पास एक वंशावली है, केवल तीन कड़ियाँ हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इसमें केवल तीन पीढ़ियाँ शामिल हैं। यह संपीड़ित है और आपको जो मिलता है वह वंश की एक रेखा है। यीशु मसीह अब्राहम से डेविड के माध्यम से हमारे पास आते हैं, तीन लिंक दिए गए हैं और महत्वपूर्ण बात यह है कि वह अब्राहम के पुत्र हैं और वंशज के अर्थ में वह डेविड के पुत्र हैं। यह बाइबिल की वंशावली की विशेषता है।

जनरल 46:16-18 से उदाहरण

आइए उत्पत्ति 46:16-18 को देखकर इसे और स्पष्ट करें। उत्पत्ति 46:16-18, मैं यहां किंग जेम्स संस्करण का उपयोग करने जा रहा हूँ क्योंकि किंग जेम्स संस्करण काफी हद

तक हिब्रू पाठ का अनुसरण करता है। यदि आप एनआईवी को देखें तो ऐसा नहीं है, हालांकि यह समान है, यह वास्तव में उस बिंदु को अस्पष्ट करता है जिसे मैं कहने की कोशिश कर रहा हूँ, क्योंकि इसमें इस्तेमाल की जाने वाली शब्दावली है। उत्पत्ति 46:16-18 पद 16 से आरंभ करते हुए आपके पास क्या है “ और गाद के पुत्र: ज़िपयोन, और हाग्गी, शूनी, और एस्बोन, एरी, और अरोदी, और अरेली। और आशेर के पुत्र: जिम्ना, और यिशुआ, और इसुई, और बरीआ, और उनकी बहन सेरह: और बरीआ के पुत्र: हेबर, और मैल्चिएल।” फिर भी, 18 मुख्य श्लोक है। “ जिल्पा के ये ही पुत्र हैं, जिसे लाबान ने अपनी बेटी लिआ को दिया था, और उस से याकूब के उत्पन्न होने पर सोलह प्राणी उत्पन्न हुए।” आप देखें कि पद 18 क्या करता है, यह उन सभी का सारांश देता है जो पहले हो चुका है और यह कहता है कि वे 16 नाम जिल्पा के पुत्र थे जब वे वास्तव में हैं, जिनमें गाद और आशेर के पुत्र भी शामिल हैं। उसके वास्तव में ये दो, गाद और आशेर थे, जबकि ये अन्य पोते और परपोते हैं जिनका उल्लेख वहां किया गया है। परन्तु यदि आप सभी 16 का योग करें तो यह कहता है, “ये जिल्पा के पुत्र हैं।” अब जाहिर तौर पर वहां “बेटा” का मतलब सगे बेटे, पोते और परपोते से है। सभी “पुत्र” शब्द में सम्मिलित हैं। और क्या कहा गया है “और ये उसे याकूब पर लाद दी गई।” उसने याकूब से इन 16 पुत्रों को जन्म दिया, हालाँकि यह पुत्र, पौत्र और परपोते की बात कर रहा है। तो आप देख सकते हैं कि वहां “नंगा करने” का मतलब है कि वह एक पूर्वज है, इसका मतलब यह नहीं है कि उसने सीधे उन्हें जन्म दिया है। वह 16 की पूर्वज बन गई और “बेटा” का मतलब यह नहीं है कि सभी सगे बेटे हैं। जहां तक शब्दावली का सवाल है, आपको सावधान रहना होगा, जब आप एक बयान पढ़ते हैं कि “अमुक ने अमुक को जन्म दिया।” इससे आप केवल यही निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि इसका अर्थ वंश है। और निश्चित रूप से उत्पत्ति 5 और उत्पत्ति 11 की वंशावली में आपके पास यही शब्दावली है, “अमुक से अमुक का जन्म हुआ।” इसका मतलब यह है कि समय के एक निश्चित बिंदु पर अमुक अगली पंक्ति का पूर्वज बन गया। अब यह निकटतम पुत्र हो सकते हैं, लेकिन इसमें दस पीढ़ियाँ हटाई जा सकती हैं, हो सकता है जैसा कि वॉरफ़ील्ड कहता है कि यह सौ या हज़ार हों, आप नहीं जानते, क्योंकि यह निर्दिष्ट नहीं है। “यीशु मसीह

इब्राहीम का पुत्र, दाऊद का पुत्र।" कितने लिंक हैं? आप तब तक नहीं जान सकते, जब तक कि आपके पास भरने के लिए कोई अन्य डेटा न हो। यह पहली चीज़ है, शब्दावली। वे तीन शब्द, "नंगा," "जन्म देना" और "बेटा।" आज हम जिस तरह से शब्दों का उपयोग करते हैं, उससे बिल्कुल अलग अर्थ में उनका उपयोग किया जाता है।

सी। बाइबिल वंशावली में संक्षिप्तीकरण सामान्य नियम है

मैं इसे और अधिक स्पष्ट करने के लिए अगले बिंदु पर जाता हूँ। दूसरा उप-बिंदु है: "बाइबिल की वंशावली में संक्षिप्तीकरण सामान्य नियम है।" यह शब्दावली के अनुसार दो व्याख्यात्मक बिंदु बताने वाला तीसरा प्रस्ताव है और दूसरा है "संक्षिप्तीकरण एक सामान्य नियम है।" संक्षिप्तीकरण वंशावली के अनुकूल है। बाइबिल की वंशावली का उद्देश्य वंश की रेखा दिखाने का साधन है। वंश की रेखा महत्वपूर्ण है और संक्षिप्तीकरण इसका उल्लंघन नहीं करता है। संक्षिप्तीकरण वंश की रेखा दिखाने के साथ संगत है। आपको यह दिखाने के लिए हर लिंक का पता लगाने की ज़रूरत नहीं है कि अमुक व्यक्ति किसका वंशज था। वंश की रेखा ही महत्वपूर्ण है। अब मैं कुछ उदाहरण दिखाता हूँ जो "संक्षरण एक सामान्य नियम है" का समर्थन करते हैं। 1 इतिहास 26:24, आपके पास दाऊद द्वारा की गई नियुक्तियों की एक सूची है, 1 इतिहास 26:24 जहां आप पढ़ते हैं, " और गेशोम का पुत्र शबूएल, जो मूसा का पोता था, खजानों का हाकिम था /" अब यदि आप उस "पुत्र" को तत्काल वंश के रूप में लेते हैं तो आप कह रहे हैं कि दाऊद के समय में मूसा का एक पोता था। हम जानते हैं कि गेशोम मूसा की पहली पीढ़ी का पुत्र था। अब हम जानते हैं कि निर्गमन 2:22 से जहां यह हमें बताता है कि गेशोम का जन्म मूसा की पत्नी सिप्पोरा से हुआ था। वहाँ एक कथात्मक प्रसंग है जिससे आप जान सकते हैं कि पुत्र तत्काल वंश का है। यहां 1 इतिहास 26:24 में उल्लिखित अगला व्यक्ति शबूएल है और गेशोम और शबूएल के बीच लगभग 400 वर्ष हैं, इसलिए मुझे लगता है कि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यहां बिंदु वंश की रेखा है। वह शबूएल अपने वंश को गेशोम और मूसा से जोड़ता है। इस वंशावली में हमारे बीच के संबंध नहीं हैं।

1 इतिहास 6:1-3 में लेवी से लेकर मूसा तक की वंशावली है, " लेवी के पुत्र: गेशोम, कहात और मरारी।" और कहात के पुत्र: अम्राम, यिसहार, हेब्रोन, और उज्जीएल। और अम्राम की सन्तान : हारून, मूसा, और मरियम। हारून के पुत्र भी: नादाब, अबीहू, एलीआजर, और ईतामार।" हमारे चरण हैं , लेवी से मूसा तक। अब क्या आप यह कहेंगे कि लेवी और मूसा के बीच चार पीढ़ियाँ थीं? यदि आपके पास पीढ़ियों के बीच अतिरिक्त लंबा समय है तो इसकी कल्पना की जा सकती है, हालाँकि, यह एक पूरी अन्य समस्या को सामने लाता है। यदि आप संख्या 3:39 को देखें जहां आपके पास मूसा के समय निर्गमन के समय इस्राएलियों की जनगणना के आंकड़े हैं। तुम पढ़ते हो , "लेवियों में से जितने पुरूष यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा और हारून ने उनके कुलों में गिन लिए, वे एक महीने के वा उस से अधिक अवस्था के थे, सब बाईस हजार

थे।" ठीक है, यदि लेवी से लेकर मूसा तक आपकी चार पीढ़ियाँ हैं तो क्या आप मूसा के समय में 22,000 लेवियों के साथ पहुँच सकते हैं? यह काफी हद तक गुणन की एक प्रक्रिया है। अब मुझे यहां एक सावधानी जोड़ने दीजिए क्योंकि मैं स्ट्रिंग के दोनों सिरों को बजाना नहीं चाहता। हम संख्याओं की जनगणना के उन आंकड़ों पर चर्चा करने जा रहे हैं। संख्याओं की पुस्तक की शुरुआत में, जैसा कि आप जानते हैं, यह अपनी समस्या का प्रतिनिधित्व करता है कि उनमें से कुछ जनगणना आंकड़ों को कैसे समझा जाए। जो कुल दिया गया है, मुझे देखने दो कि क्या मुझे संख्या के अध्याय 1 श्लोक 46 में वह श्लोक मिल सकता है, " यहाँ तक कि वे सभी 603,550 थे।" यह बीस वर्ष और उससे अधिक उम्र के 600 या उससे अधिक हजार पुरुष हैं, जिनमें महिलाएं शामिल नहीं हैं और बच्चे शामिल नहीं हैं और उस 600 प्लस हजार से आप इसे तीन या चार से गुणा कर सकते हैं और आप कुछ मिलियन तक पहुंच जाएंगे। हम उस पूरी समस्या पर बाद में चर्चा करेंगे। मुझे लगता है कि यहां एक ऐसी समस्या है जिस पर कुछ मिनटों में चर्चा करना कठिन है। ऐसा लगता है जैसे वंशावली के केवल चार कड़ियों के लिए लेवियों की पर्याप्त संख्या थी। ऐसा लगता है मानो वंशावली की वे चार कड़ियाँ संकुचित हो गई हैं और वहाँ आपके पास "पुत्र" का अर्थ वंशज है।

यदि आप 1 इतिहास 6:3-14 की तुलना एज्रा 7:1-5, समानांतर वंशावली से करते हैं, तो आप पाएंगे कि यदि आप उनकी तुलना करते हैं तो एज्रा वंशावली में 6 नाम छोड़े गए हैं। तो आप अभी भी सभी कड़ियों को शामिल किए बिना वंश की रेखा का पता लगा सकते हैं, इसमें कोई विरोधाभास नहीं है, यह बाइबिल की वंशावली की प्रकृति का सिर्फ एक हिस्सा है कि वे हमेशा सभी कड़ियों को शामिल नहीं करते हैं। उद्देश्य वंश की रेखा है, संपूर्ण रिकॉर्ड नहीं।

मैथ्यू 1:1 में पहले से ही उल्लेखित एक में आगे का चित्रण "दाऊद के पुत्र यीशु मसीह।" बाद में मैथ्यू 1 में आपको एक बड़ी और विस्तृत वंशावली मिलती है, जो हमें 42 लिंक देती है लेकिन वहां भी हमारे पास पूरी एक भी नहीं है। इसलिए यदि आप वंशावली की तुलना करेंगे तो पाएंगे कि वहां भी अंतराल हैं। तो मुद्दा यह है कि "बाइबिल की वंशावली में संक्षिप्तीकरण सामान्य नियम है।" वंशावली का उद्देश्य वंश की रेखा है और वंश की रेखा का पता लगाने के लिए आपको सभी कड़ियों की आवश्यकता नहीं है।

4. इन वंशावली में शामिल संख्याएँ कालानुक्रमिक महत्व का आभास दे सकती हैं लेकिन वास्तव में उनका इससे कोई लेना-देना नहीं है और इसलिए हम वॉरफील्ड और ग्रीन के लेख, प्रस्ताव 3 पर वापस आते हैं। "उत्पत्ति 5 और 11 में वंशावली अलग-अलग हैं कालानुक्रमिक की तुलना में उद्देश्य, उनका उद्देश्य वंश की रेखाओं को दिखाना है। संख्या 4. "इन वंशावलियों में शामिल संख्याएँ कालानुक्रमिक महत्व का आभास दे सकती हैं, लेकिन वास्तव में उनका इस पर कोई प्रभाव नहीं है।" वे बस जीवन काल और उस उम्र को इंगित करने का काम करते हैं जिस पर बच्चे पैदा करना शुरू हुआ। वॉरफ़ील्ड का कहना है कि जब हमें बताया जाता है कि एक आदमी, जब उसके उत्तराधिकारी का जन्म हुआ था, तब उसकी उम्र 130 वर्ष थी और वह उसके बाद 800 वर्षों तक जीवित रहा और बेटे-बेटियाँ पैदा करता रहा, 930 वर्ष की आयु में मर गया, ये सभी बातें एक ज्वलंत प्रभाव डालने में सहयोग करती हैं। दुनिया के उन दिनों में हम पर एक बड़ी और भव्य मानवता का आगमन हुआ। ग्रीन कहते हैं, "हमें यह क्यों बताया जाता है कि प्रत्येक पितृपुरुष अपने बेटे के जन्म

के बाद कितने समय तक जीवित रहा और उसके जीवन की पूरी लंबाई क्या थी? ये संख्याएँ उसके बेटे के जन्म की उम्र के समान नियमितता के साथ दी गई हैं। किसी काल का कालक्रम बनाने में इनका कोई उपयोग नहीं है। वे हमें केवल व्यक्तिगत जीवन की एक रूपरेखा प्रदान करते हैं। इस कारण इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे मानव जीवन के मूल शब्द के इन चयनित उदाहरणों में दर्ज हैं। वे दिखाते हैं कि जलप्रलय से पहले के युग में यह क्या था, वे दिखाते हैं कि बाद में इसे धीरे-धीरे कैसे कम किया गया लेकिन ऐसा करने के लिए यह आवश्यक नहीं था कि प्रत्येक व्यक्ति का नाम आदम से नूह और नूह से इब्राहीम तक की पंक्ति में रखा जाए। कुछ भी इसके करीब आ रहा है। उपयुक्त संख्याओं के साथ विशेष जिंदगियों की एक श्रृंखला ही आवश्यक थी। जहां तक लगता है यही सब कुछ है जो हमें दिया गया था। इन वंशावली पर कालानुक्रमिक गणना को आधारित करने की धारणा एक बुनियादी गलती है। उन्हें किसी उद्देश्य के लिए रखते हुए, उन्हें निर्माण की उस पद्धति से उप-सेवा के लिए डिज़ाइन नहीं किया गया था जिसके लिए वे उपयुक्त नहीं हैं।

उदाहरण - जनरल 11:10 अब, उदाहरण के लिए, यदि हम उत्पत्ति 11:10 को देखें, जिसे ग्रीन द्वारा मनमाने ढंग से चुना गया है, लेकिन आपको जीवन की लंबाई और बच्चे पैदा करने की उम्र का एक परिप्रेक्ष्य, एक विचार देने के उद्देश्य से चुना गया है। वह निश्चित होगा कि यह सटीक था, लेकिन यह आपको केवल व्यक्तिगत जीवन के बारे में कुछ बताता है, यह आपको अवधि के कालक्रम के बारे में नहीं बताता है। इनमें न जाने कितने लिंक शामिल हैं। उम्र धीरे-धीरे कम होती जाती है, इब्राहीम 175 तक। मैं इसे और स्पष्ट करने के लिए कहने जा रहा था, यदि आप उत्पत्ति 11:10 को देखते हैं तो आप पढ़ते हैं कि ये शेम की पीढ़ियाँ हैं, " ये शेम की पीढ़ियाँ हैं: शेम एक सौ वर्ष का था और जलप्रलय के दो वर्ष बाद शेम बूढ़ा हुआ, और अर्पक्षद को जन्म दिया; और अर्पक्षद के जन्म के पश्चात् शेम पांच सौ वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियाँ उत्पन्न हुईं। और अर्पक्षद पैंतीस वर्ष जीवित रहा, और उस से सलाह का जन्म हुआ; और सलाह के जन्म के पश्चात् अर्पक्षद चार सौ तीन वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियाँ उत्पन्न हुईं। और सलाह तीस वर्ष जीवित

रही, और एबेर उत्पन्न हुआ।” वह 500 साल तक जीवित रहता है और उसके चार बेटे-बेटियाँ होती हैं, लेकिन सौ साल की उम्र में वह पूर्वज बन जाता है। अब बात यह है कि तुम नहीं जानते कि वह शेम से पाँच पीढ़ी दूर है या दस पीढ़ी या सौ पीढ़ी। तुम्हें बस यह पता नहीं है. आप इसे शब्दावली से नहीं बता सकते।

हम बस इतना जानते हैं कि उसने किसी ऐसे व्यक्ति को जन्म दिया होगा जिसे हम नहीं जानते, फिर बदले में वह किसी और को जन्म देने के बजाय सौ साल जीवित रहा। हम निश्चित रूप से नहीं जानते कि अर्फ़क्साड को किसने जन्म दिया। आप देखते हैं कि अंतराल हो सकते हैं। आप अब भी शेम से कहेंगे कि वह सौ साल का है और उससे अरफ़क्साद का जन्म हुआ, भले ही यह सीधे तौर पर मामला हो। उत्पत्ति 11 में उस उदाहरण को देखें; आप इसके निर्माण के तरीके का अनुसरण करें। इसलिए मुझे लगता है कि हम यह स्पष्ट करने के लिए क्या कहेंगे कि शेम बाढ़ से दो साल पहले अरफ़क्साद का पूर्वज बन गया था। हम यह नहीं बता सकते कि क्या वह तत्काल पूर्वज था या क्या बीच में कई कड़ियाँ थीं। वह शेम के वंशज से पैदा हुआ हो सकता है और उसकी वंशावली इस बिंदु तक हो सकती है जब शेम 100 वर्ष का था, आप नहीं बता सकते। अगर बीच में लिंक नहीं होते तो आप नहीं जानते कि शेम की उम्र कितनी थी। जब अर्फ़क्साड का जन्म हुआ तब तक वह मर चुका था और चला गया था।

एशले लॉन्ग द्वारा प्रतिलेखित,
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
 राचेल एशले द्वारा अंतिम संपादन
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया